

# डॉ. गैरी येट्स, 12 की पुस्तक, सत्र 24, सपन्याह

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह सपन्याह की पुस्तक पर व्याख्यान 24 है।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 18 में, प्रभु ने इस्राएल के लोगों से वादा किया था कि वह उनके लिए मूसा जैसा एक नबी खड़ा करेगा।

उस वादे ने वास्तव में इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया कि परमेश्वर, पूरे इस्राएल के इतिहास में, मूसा जैसा एक भविष्यवक्ता प्रदान करेगा जो हर पीढ़ी में लोगों को अपना वचन सुनाएगा और अपना संदेश देगा। 12 की पुस्तक दर्शाती है और साबित करती है कि परमेश्वर अपने वचन के प्रति वफादार था। इस्राएल के इतिहास में ऐसे समय में भी जब वे उसके प्रति विश्वासघाती थे और अपनी वाचा की ज़िम्मेदारियों को नहीं निभा रहे थे, प्रभु ने सबसे पहले असीरियन संकट के दौरान भविष्यवक्ताओं के एक समूह को खड़ा किया।

हमने उनकी सेवकाई के बारे में बात की है। जब यहूदा बेबीलोन संकट का सामना कर रहा था, तब परमेश्वर ने लोगों को इसके लिए तैयार करने, आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देने के लिए भविष्यवक्ताओं की एक श्रृंखला को खड़ा किया। यहाँ तक कि इस अंतिम समय में भी जब परमेश्वर ने पीढ़ियों के लिए आने वाले न्याय की धमकी और चेतावनी दी थी, उन्हें पश्चाताप करने का एक आखिरी मौका दिया।

इस समय के दौरान नहूम और ओबद्याह नबी ने सेवा की और उन लोगों के खिलाफ न्याय का प्रचार किया जिन्होंने यहूदा के लोगों पर अत्याचार किया था या उनके खिलाफ परमेश्वर के न्याय को लागू किया था। नहूम ने अशूरियों के न्याय पर ध्यान केंद्रित किया। ओबद्याह ने एदोमियों के न्याय पर ध्यान केंद्रित किया।

12 की पुस्तक में दो भविष्यवक्ता हैं, हबक्कूक और सपन्याह, जिन्होंने विशेष रूप से यहूदा के लोगों को उपदेश दिया और उन्हें आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दी और बताया कि कैसे परमेश्वर बेबीलोनियों का उसी तरह उपयोग करने जा रहा है जिस तरह उसने अशूरियों का उपयोग किया था। अब, सपन्याह और हबक्कूक का संदेश प्रमुख भविष्यवक्ताओं यिर्मयाह और यहेजकेल के संदेश का पूरक है। यिर्मयाह ने देश के लोगों की सेवा की और बेबीलोन के आक्रमण से कई साल पहले अपनी सेवा शुरू की।

इस पूरी अवधि में वह लोगों को चेतावनी दे रहा है कि उन्हें परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए या उन्हें आगे के विनाश से बचने के लिए बेबीलोनियों के अधीन होना चाहिए। परमेश्वर उन निर्वासितों के प्रति भी वफादार था जो 605 से आगे बेबीलोन में रह रहे थे और यहाँ तक कि उनके

लिए भविष्यवाणी करने वाली आवाज़ें भी प्रदान कीं। यहजेकेल को 597 में निर्वासित कर दिया गया और उसने बेबीलोन में रहने वाले निर्वासितों को प्रभु के वचन का प्रचार किया।

दानियेल, जो यहूदा से एक राजनीतिक अधिकारी है और निर्वासितों में से एक है और बेबीलोन और फारसी सरकार दोनों में एक राजनीतिक अधिकारी है, वह एक भविष्यवक्ता भी था। इसलिए, उसे हमारे अंग्रेजी बाइबल में प्रमुख भविष्यवक्ताओं में शामिल किया गया है। उसे हिब्रू कैनन में लेखन के बीच शामिल किया गया है।

हम सबसे पहले सपन्याह के संदेश को देखेंगे और फिर हबक्कूक के संदेश को देखेंगे। मुझे पता है कि यह विहित क्रम से बाहर है, लेकिन ऐसा लगता है कि सपन्याह के संदेश से हम हबक्कूक की तुलना में उसके मंत्रालय की ऐतिहासिक अवधि को थोड़ा और स्पष्ट रूप से पहचान सकते हैं। इसलिए मैं पहले उसके बारे में बात करना चाहता हूँ।

सपन्याह का संदेश यह है कि सपन्याह कहता है कि परमेश्वर यहूदा के विरुद्ध जो न्याय लाने के लिए तैयार है, वह प्रभु का दिन है। प्रभु का दिन तेजी से निकट आ रहा है, और यह न्याय कठोर और अंततः ब्रह्मांडीय दायरे में होगा क्योंकि परमेश्वर यहूदा के विरुद्ध जो न्याय लाएगा, वह अंततः ऐसा न्याय होगा जिसे परमेश्वर पूरे संसार पर उंडेलेगा।

तो, हमने प्रभु के दिन की इस अवधारणा को देखा है। यह 12 की पुस्तक में एक प्रमुख उद्देश्य और विषय है। योएल की भविष्यवाणी में 12 की पुस्तक की शुरुआत में इस पर ज़ोर दिया गया है।

आमोस की किताब में भी इस बारे में बात की गई है। आमोस लोगों से कहता है कि उन्हें प्रभु के दिन का इंतज़ार नहीं करना चाहिए क्योंकि उनका मानना है कि यह मुक्ति का समय होगा। आमोस ने उन्हें चेतावनी दी कि यह न्याय का समय होगा।

सपन्याह भी यही बात कहने जा रहा है। जिस तरह से आमोस ने चेतावनी दी थी, अशशूर का संकट प्रभु का दिन है और यह निकट है। यह इतिहास का एक खास समय है जब परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करने और उनके पापों के लिए उन्हें दण्ड देने के लिए नीचे आ रहा है।

वे परमेश्वर के शत्रु बन गए हैं और इसीलिए परमेश्वर उनका न्याय करने जा रहा है। सपन्याह भी लोगों को इसी बात की चेतावनी देने जा रहा है। अब प्रभु के दिन की एक नई किस्त और एक अलग चरण घटित हो रहा है।

भगवान बेबीलोन के हाथों लोगों का न्याय कर रहे हैं, और जैसे-जैसे दुश्मन करीब आ रहा है, वह प्रभु का दिन है। निर्वासन के बाद के समय में, योएल लोगों से कहता है कि अगर वे पश्चाताप नहीं करते और सही रास्ते पर नहीं आते हैं तो प्रभु का एक और दिन आने वाला है। तो, यह विषय और यह मूल भाव 12 की पूरी किताब में चलता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में, हमने नहूम की पुस्तक के साथ काम करते समय इस बारे में कुछ बात की थी, लेकिन असीरिया से बेबीलोन में सत्ता का हस्तांतरण और असीरियन संकट से

बेबीलोन संकट की ओर बढ़ना 626 ईसा पूर्व में गंभीरता से शुरू हुआ जब नबोपोलासर ने स्वतंत्रता का दावा किया और असीरिया से बेबीलोन की स्वतंत्रता स्थापित की। उस समय से, नबोपोलासर और उसका बेटा नबूकदनेस्सर वे साधन बनने जा रहे हैं जिनका उपयोग भगवान असीरियन साम्राज्य को गिराने के लिए करते हैं। नबोपोलासर ने अंततः खुद को मेदियों के साथ जोड़ लिया, और इस शक्तिशाली सैन्य गठबंधन ने उस समय से असीरियन पर आक्रामक रूप से हमला करना शुरू कर दिया।

614 में वे आशेर के पतन का कारण बने। 612 ईसा पूर्व में, वे निनवे के पतन का कारण बने, जो नहूम की भविष्यवाणी की पूर्ति थी। और फिर 609 में, असीरियन सेना का जो हिस्सा बचा था, वह आखिरकार हारान शहर में बेबीलोनियों के हाथों गिर गया।

उसके कुछ साल बाद, नबोपोलासर के बेटे नबूकदनेस्सर ने 605 ईसा पूर्व में कारकेमिश शहर में मिस्रियों पर जीत में बेबीलोन की सेनाओं का नेतृत्व किया। यह प्राचीन निकट पूर्व के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण है और इज़राइल और यहूदा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण है क्योंकि उस जीत ने बेबीलोन और नव-बेबीलोन साम्राज्य को प्राचीन निकट पूर्व में प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित किया। उस जीत के बाद, नबूकदनेस्सर तुरंत दक्षिण की ओर मार्च करने जा रहा है और सीरियाई फिलिस्तीन में स्थित देशों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश कर रहा है।

उस वर्ष उसके पिता की मृत्यु हो जाएगी और उसे सिंहासन पर नियंत्रण पाने के लिए जल्दी से बेबीलोन वापस जाना होगा। लेकिन वह वर्ष 605 में यहूदा से निर्वासितों के पहले समूह को भी वापस ले जाएगा। निर्वासितों के उस छोटे समूह में सबसे प्रमुख व्यक्ति के रूप में दानिय्येल भी शामिल होने जा रहा है।

इस समय से, यहूदा के राजा और यहूदा के नेतृत्व नबूकदनेस्सर और बेबीलोनियों के प्रति जवाबदेह होंगे। उन्हें उन्हें कर देने के लिए मजबूर किया जाएगा और अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। हर साल नबूकदनेस्सर और उसकी सेनाएँ सीरिया-फिलिस्तीन में अभियान चलाने जा रही हैं।

वहाँ उन्होंने जो कुछ किया, उसमें से एक यह था कि उन्हें अक्सर विद्रोही राष्ट्रों से निपटना पड़ता था, जिन्होंने उन्हें कर देने से इनकार कर दिया था और जो उनके वफ़ादार जागीरदार नहीं थे। यह मुद्दा दूसरे निर्वासन की ओर ले जाता है जो 597 में होता है। यहूदा का राजा, यहोयाकीम, बेबीलोनियों के खिलाफ़ विद्रोह करता है।

उसके शासनकाल के दौरान हमेशा तनाव बना रहता था, जहाँ वह मिस्र और बेबीलोन के बीच आगे-पीछे होता रहता था। एक समय ऐसा आया जब यहोयाकीम बेबीलोनियों के खिलाफ़ विद्रोह कर देता है, कर देने से इनकार कर देता है। इसके परिणामस्वरूप, नबूकदनेस्सर अपनी सेना को यरूशलेम लाने जा रहा है।

वे 597 में शहर में पहुँचते हैं। उनके वहाँ पहुँचने से पहले, राजा यहोयाकीम की मृत्यु हो चुकी होती है। इसलिए जब नबूकदनेस्सर शहर में आता है, तो वह निर्वासितों के दूसरे समूह को ले जाने वाला होता है, जो इस बार एक बड़ा समूह होता है।

निर्वासितों के दूसरे समूह में भविष्यवक्ता यहजेकेल शामिल होगा। बाद में वर्ष 593-592 में, यहजेकेल को एक भविष्यवक्ता कहा जाएगा, जबकि वह बेबीलोन में निर्वासित के रूप में रह रहा है। राजा यहोयाकीम, यहोयाकीम का 18 वर्षीय पुत्र, जो केवल तीन महीने के लिए सिंहासन पर था, 18 वर्ष का था।

उन्हें भी ले जाया गया और बेबीलोन में बंदी बनाकर रखा गया। तो, यह निर्वासन का दूसरा चरण और दूसरा चरण है। इस समय के दौरान भविष्यवक्ता यिर्मयाह लोगों को आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दे रहा है और उन्हें बता रहा है कि वे उस बिंदु पर पहुँच गए हैं जहाँ न्याय को पूरी तरह से टालना कोई विकल्प नहीं है।

यहूदा को पूरी तरह से नष्ट होने से बचाने का एकमात्र तरीका यह है कि राजाओं और नेतृत्व और सेना को बेबीलोन के अधीन होना चाहिए और यह स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर ने यहूदा का नियंत्रण नबूकदनेस्सर को सौंप दिया है। यदि वे उसके अधीन हो जाते हैं, तो राष्ट्र बच जाएगा और परमेश्वर उन्हें पूरी तरह से नष्ट होने से बचाएगा। हालाँकि, जब नबूकदनेस्सर 597 में शहर में आया, तो उसने यहोयाकीम के स्थान पर एक राजा को सिंहासन पर बिठाया।

यह यहोयाकीम का चाचा, सिदकिय्याह था। उसे मूल रूप से बेबीलोनियों की कठपुतली बनने के लिए सिंहासन पर बिठाया गया था। उन्होंने उसे वहाँ इसलिए बिठाया क्योंकि उनका मानना था कि वह ऐसा व्यक्ति है जिसे वे नियंत्रित कर सकते हैं।

जब तक वह अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेगा, और यिर्मयाह कहता है, जब तक वह बेबीलोन के अधीन रहेगा, तब तक सब ठीक रहेगा। हालाँकि, सिदकिय्याह के अधीन सेना और यहूदी अधिकारी अंततः उसे बेबीलोनियों के खिलाफ विद्रोह करने के लिए मना लेते हैं। इसलिए, यिर्मयाह द्वारा दी गई सलाह को अस्वीकार करते हुए, वह बेबीलोनियों के खिलाफ विद्रोह करता है और श्रद्धांजलि देने से इनकार करता है।

यह बेबीलोन के निर्वासन के तीसरे और अंतिम चरण की ओर ले जाता है। नबूकदनेस्सर फिर से अपनी सेना को यरूशलेम ले आएगा। इस बार, शहर को बख्शने और उसे एक और मौका देने के बजाय, वह सिदकिय्याह को अपना कैदी बना लेगा।

वह यरूशलेम शहर को नष्ट कर देगा, उसके द्वारों को नष्ट कर देगा, और मंदिर को जला देगा। लोगों का एक बड़ा हिस्सा या तो इस आक्रमण या घेराबंदी से मारा जाता है, या उन्हें निर्वासित के रूप में ले जाया जाता है। मूल रूप से, 587-586 के वर्षों के बाद, देश में केवल गरीब लोग ही बचे हैं।

यिर्मयाह ने कृपापूर्वक वहाँ रहने और इन लोगों की सेवा करने तथा उन्हें प्रभु की ओर से आध्यात्मिक सलाह, प्रोत्साहन और निर्देश देने के लिए सहमति व्यक्त की। लेकिन मूलतः, इससे यहूदा का राज्य समाप्त हो गया। सिदकिय्याह को बंदी बनाकर ले जाया गया।

अपने विद्रोह के कारण, जब उसे और उसके परिवार को पकड़ लिया जाता है, तो उसके दो बेटों को मार दिया जाता है। फिर सिदकिय्याह अंधा हो जाता है। आखिरी चीज़ जो उसने देखी वह थी उसके बेटों की मौत और उनकी फांसी।

उसे बेबीलोन ले जाया गया है, और वह अपना बाकी जीवन वहीं बिताएगा। और इसलिए, यहूदा के आखिरी दो राजा, यहोयाकीम, 18 वर्षीय राजा जिसने केवल तीन महीने तक शासन किया, और सिदकिय्याह, उसका चाचा, जो अंत में यहूदा का राजा था, दोनों ही बेबीलोन में कैदी बनने जा रहे हैं। वे आम लोगों के भाग्य में भागीदार बनने जा रहे हैं।

सपन्याह की सेवकाई वास्तव में आने वाले बेबीलोन संकट की प्रस्तावना के रूप में होती है। वह लोगों को निर्वासन के इन तीन चरणों से पहले पश्चाताप करने की आवश्यकता के बारे में चेतावनी दे रहा है। और वास्तव में कुछ मायनों में, शायद उस समय से भी पहले जब बेबीलोन के लोग एक प्रमुख शक्ति बन जाते हैं।

यहाँ सपन्याह जिन पापों का सामना कर रहा है, उनमें वर्णित परिस्थितियों और स्थितियों से हम जो कुछ कह सकते हैं, उससे सपन्याह की सेवकाई वास्तव में राजा योशियाह के शासनकाल के दौरान शुरू होती है। योशियाह यहूदा का अंतिम ईश्वरीय राजा था। उसने 640 से 609 ईसा पूर्व तक शासन किया।

वह आठ साल की उम्र में राजा बन गया था। 609 ईसा पूर्व में जब वह 39 साल का था, तब वह मगिदो की लड़ाई में मारा गया था। और अगर हम सपन्याह को देखें और उसके मंत्रालय के संदर्भ के बारे में सोचें, तो हमारे पास एक और उदाहरण है जहाँ एक छोटे से भविष्यवक्ता ने अपने समाज, अपनी संस्कृति और परमेश्वर के लोगों पर बड़ा प्रभाव डाला।

योशियाह को यहूदा के सबसे ईश्वरीय राजाओं में से एक के रूप में याद किया जाता है। वास्तव में, राजाओं की पुस्तक उसके शासन और उसके शासन का मूल्यांकन करते हुए केवल यह नहीं कहती है कि उसने वही किया जो प्रभु की नज़र में सही था और वह अपने पिता दाऊद के मार्गों पर चला। यह वास्तव में यह कहने जा रहा है कि कोई भी अन्य राजा ऐसा नहीं था जिसने योशियाह की तरह आज्ञा का पालन किया और प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया।

एक अर्थ में, राजाओं की पुस्तक में, उसे आज्ञाकारिता के सर्वोच्च उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसका कारण योशियाह द्वारा किए गए सुधारों की श्रृंखला है, जहाँ वह लोगों को वापस बुलाता है और आक्रामक रूप से सुधारों को आरंभ करने का प्रयास करता है, जिससे प्रभु की अधिक निष्ठावान आराधना और प्रभु की आज्ञाओं का पालन हो सके। मेरी समझ यह है कि जब हम सपन्याह की सेवकाई की पृष्ठभूमि और संदर्भ और सेटिंग को देखते हैं, तो ऐसा लगता है कि सपन्याह ने स्वयं उन सुधारों को लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अब, मैं सपन्याह के बारे में एक व्यक्ति के रूप में उसके मंत्रालय के समय और संदर्भ में कुछ बातें बताना चाहता हूँ। सपन्याह अध्याय 1 पद 1 में यह कहा गया है, यहोवा का वचन जो सपन्याह के पास आया और फिर यह यहाँ कई पीढ़ियों तक उसके परिवार की वंशावली का उल्लेख करने जा रहा है। कूशी का पुत्र, गदल्याह का पुत्र, अमर्याह का पुत्र, हिजकिय्याह का पुत्र।

ठीक है, तो यहाँ एक दिलचस्प चर्चा है। हम हिजकिय्याह का नाम जानते हैं। वह यहूदा के सबसे प्रसिद्ध, सबसे ईश्वरीय राजाओं में से एक है।

वह वही है जिसने 701 में अशूर के आक्रमण के संदर्भ में प्रभु पर भरोसा किया, और यहूदा को बख्शा गया, और यरूशलेम को बख्शा गया और वास्तव में उत्तरी राज्य की तरह अशूरियों द्वारा पूरी तरह से नष्ट नहीं किया गया, विशेष रूप से हिजकिय्याह के विश्वास के कारण। अब, टिप्पणीकार यहाँ चर्चा करेंगे, क्या यह हिजकिय्याह यहूदा का राजा है? संभवतः इसके खिलाफ तर्क यह तथ्य है कि ऐसा लगता है कि अगर हम हिजकिय्याह के बारे में बात कर रहे थे, तो इसमें विशेष रूप से उल्लेख किया जाएगा कि वह यहूदा का राजा था। तो यह इसके खिलाफ तर्क हो सकता है।

हालाँकि, इसके लिए तर्क यह है कि जब भी किसी भविष्यवक्ता की पहचान भविष्यवाणियों की किताबों में की जाती है, तो यह बहुत ही दुर्लभ है कि हमें उसके पिता के अलावा कुछ और मिले। लेकिन यहाँ हमारे पास चार पीढ़ियों के लिए परिवार की वंशावली का उल्लेख है। इसलिए, यह तथ्य कि इस बिंदु पर प्रकाश डाला गया है, मुझे लगता है कि सपन्याह राजा हिजकिय्याह के परिवार से आता है।

अगर ऐसा है, तो हमारे पास उन सभी विभिन्न परिस्थितियों का एक और उदाहरण है, जिनसे परमेश्वर अंततः पुराने नियम के समय में अपने भविष्यवक्ताओं को बुलाता है। आमोस एक ज़मींदार और चरवाहा था और ऐसा लगता है कि उसके पास काफी महत्वपूर्ण संपत्ति थी। मीका को परमेश्वर ने मोरेशेथ गत नामक स्थान से बुलाया है।

यशायाह का संबंध किसी न किसी तरह से शाही परिवार से भी है। ऐसा लगता है कि सपन्याह का भी ऐसा ही संबंध है। यहजेकेल और यिर्मयाह को ज़्यादा पुरोहित परिवारों से बुलाया जाता है।

इसलिए, परमेश्वर हस्तक्षेप करता है और इन लोगों को विभिन्न परिस्थितियों से बाहर निकालता है। वास्तविकता यह है कि परमेश्वर आज भी ऐसा ही करता है, जब वह लोगों को बुलाता है। लेकिन भविष्यवक्ता विभिन्न परिस्थितियों से आते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि सपन्याह का शाही परिवार से संबंध है। ऐसा भी प्रतीत होता है कि सपन्याह के उपदेशों का उस समय के राजा योशियाह पर भी प्रभाव पड़ा था। अब योशियाह के शासनकाल के बारे में कुछ विचार और कुछ तथ्य।

योशियाह आठ साल की उम्र में राजा बन गया। यह हमें बताएगा कि वास्तव में अपने जीवन की शुरुआत से ही, वह मनश्शे के दुष्ट उदाहरण के बावजूद प्रभु के मार्ग का अनुसरण करता है जो उसके पहले आया था और फिर उसके ठीक पहले अम्मोन। यहूदा के दो सबसे दुष्ट राजा।

मनश्शे ने 55 साल तक राज किया और हर तरह की मूर्तिपूजा की। उसने मंदिर में पूजा के लिए मूर्तिपूजक वस्तुएं लायी थीं। कहा जाता है कि उसने मंदिर में अशेरा भी लायी थी।

उसने अपने एक बेटे को झूठे देवताओं को बलि चढ़ा दिया। इसलिए, उसने सभी तरह के भ्रष्ट काम किए थे। उसने हिंसा और अन्याय को भी बढ़ावा दिया था, जो मुझे लगता है कि उसके कुछ धार्मिक विश्वासों से जुड़ा था।

और इसलिए, 2 राजा 21 यह कहने जा रहा है कि मनश्शे ने अपने से पहले आए सभी राजाओं से ज़्यादा बुरा किया, यहाँ तक कि इस्राएलियों के नियंत्रण में आने से पहले देश में रहने वाले एमोरियों से भी ज़्यादा बुरा किया। 2 राजा अध्याय 21 आयत 13 से 15 यह भी कहता है कि मनश्शे ने यहूदा के भाग्य को उसके धर्मत्याग के साथ सील कर दिया था। परमेश्वर ने तय किया था कि वह मनश्शे के धर्मत्याग के कारण यरूशलेम को एक बर्तन की तरह पोंछ देगा।

दिलचस्प बात यह है कि वहाँ अंतिम घोषणा के बावजूद, परमेश्वर अभी भी यहूदा के लोगों को पश्चाताप करने और परमेश्वर के न्याय से बचने का अवसर प्रदान कर रहा है। इसलिए, मनश्शे और अम्मोन के शासनकाल में 55 या 60 वर्षों तक बुराई का यह लंबा शासन रहा है। अम्मोन ने अपने पिता की नीतियों को आगे बढ़ाया।

इसलिए, जब योशियाह आठ साल की उम्र में सिंहासन पर बैठा है और बहुत कम उम्र में ही प्रभु की खोज शुरू कर देता है, तो यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। हम सवाल पूछ सकते हैं, अच्छा, वह क्या था जिसने विशेष रूप से योशियाह को ऐसा करने और अपने जीवन में इस दिशा को अपनाने के लिए प्रेरित किया? मुझे लगता है कि वहाँ कुछ प्रारंभिक प्रभाव हैं। उसकी माँ, जेदीदा का उल्लेख किया गया है।

मुझे लगता है कि योशियाह की संभवतः एक ईश्वरीय माँ थी जो उसे इस दिशा में ले जा रही थी। उसके पास हिल्कियाह और अन्य जैसे सलाहकार और पुजारी भी थे जिन्होंने उसे उस दिशा में सलाह दी थी। लेकिन मेरा मानना है कि अन्य प्रभावों में से एक संभवतः भविष्यवक्ता सपन्याह स्वयं है।

अब हमें 2 इतिहास, अध्याय 34 और पद तीन में योशियाह द्वारा किए गए सुधारों, इन चीज़ों के समय और यहोवा के साथ योशियाह के रिश्ते की प्रगति के बारे में कुछ जानकारी मिलती है। 2 इतिहास 34.3 में योशियाह के बारे में जो बताया गया है, वह यह है कि अपने शासनकाल के आठवें वर्ष में, जब वह अभी भी एक बालक था, उसने दाऊद के परमेश्वर की खोज शुरू कर दी। इसलिए, जब वह सिंहासन पर बैठा और आठ वर्ष का था, तो उसके जीवन में पहले से ही ईश्वरीय प्रभाव थे।

फिर जब वह 16 साल की उम्र में खुद एक आदमी बन जाता है, अपने शासनकाल के आठवें साल में, वह अपने पिता परमेश्वर की तलाश करता है। तो यह उसके पूरे जीवन की दिशा निर्धारित करने वाला है। वह प्रारंभिक नींव उसके शासनकाल की गुणवत्ता और अवधि के लिए महत्वपूर्ण है।

लेकिन फिर यह भी कहा जा रहा है कि अपने बारहवें वर्ष में, उसने यहूदा और यरूशलेम को ऊँचे स्थानों, अशेरीम और नक्काशीदार और धातु की मूर्तियों से शुद्ध करना शुरू कर दिया। इसलिए अपने बारहवें वर्ष में, जब वह 20 वर्ष का था, वर्ष 628 ईसा पूर्व में, योशियाह ने

आक्रामक रूप से मूर्तिपूजक तत्वों को शुद्ध करना शुरू कर दिया, जिन्हें उसके पिता मनश्शे और अम्मोन ने यहूदा के लोगों की पूजा में लाया था। अब, हम योशियाह के सुधारों को जोड़ते हैं, और वे एक कदम आगे बढ़ते हैं; हम इसे उसके शासनकाल के अठारहवें वर्ष में हुई किसी चीज़ से जोड़ते हैं।

क्योंकि उसके शासनकाल के अठारहवें वर्ष में, 622 ई.पू. में, यरूशलेम में मंदिर की मरम्मत का काम चल रहा था। जब वे साफ-सफाई कर रहे थे और मंदिर की मरम्मत कर रहे थे और उसे पूजा स्थल के रूप में बहाल कर रहे थे, तो उन्हें कानून की एक छिपी हुई किताब मिली जो खो गई थी और भूल गई थी। यह मूसा के कानून का एक हिस्सा था।

ऐसा लगता है कि इसमें कम से कम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा शामिल हो सकता है। यह वाचा के आदेश देता है, यह चेतावनी देता है कि क्या होगा। जब वह स्कॉल, यह नया खोजा गया स्कॉल, परमेश्वर का नियम भुला दिया गया था, मनश्शे और अम्मोन के समय में चीज़ें इतनी भ्रष्ट और इतनी बुरी थीं, उन्होंने परमेश्वर के नियम और परमेश्वर की आज्ञाओं को भी खो दिया था।

राजा को ये आज्ञाएँ खुद के लिए लिखनी थीं, लेकिन कानून की अनदेखी की गई। लेकिन जब वे इस कानून को लेकर आए और वे कानून की इस नई खोजी गई किताब को राजा योशियाह के पास लाए, तो उन्होंने उसे पढ़ा, उसने अपने कपड़े फाड़ दिए, उसे एहसास हुआ कि यह संदेश कितना गंभीर है, और उसने जीवन और व्यवहार और विशेष रूप से यहूदा के लोगों की पूजा को वापस उसी तरह लाने के लिए और सुधार शुरू किए जैसा कि परमेश्वर उनसे चाहता था। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि हम इस प्रगति का पता लगाते हैं।

उसने अपने आठवें वर्ष में ईश्वर की खोज में लगन से काम करना शुरू कर दिया। उसने अपने बारहवें वर्ष में यहूदा को मूर्तिपूजा से मुक्त करना शुरू कर दिया। उसने ये सुधार 622 में कानून की पुस्तक की खोज के सिलसिले में किए।

यहाँ स्पष्ट बात यह है कि ऐसी चीज़ें थीं जिन्होंने व्यवस्था की पुस्तक मिलने से पहले ही योशियाह के जीवन और उसकी सेवकाई की दिशा को प्रभावित किया था। और इसलिए, मुझे लगता है कि उसकी माँ के प्रभाव, अन्य ईश्वरीय नेताओं के प्रभाव के अलावा, सपन्याह का उपदेश संभवतः उन कारणों में से एक है जिसके कारण योशियाह को व्यवस्था की पुस्तक की खोज से पहले 628 ईसा पूर्व में इन सुधारों को करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। अब, उस तर्क को बल देने वाली बात यह है कि जब हम सपन्याह द्वारा वर्णित परिस्थितियों को देखते हैं जो यहूदा में चल रही हैं।

जब वह लोगों की आध्यात्मिक स्थिति के बारे में बात करता है, तो हम यहाँ जो देखते हैं वह यह है कि इस बात की पुष्टि होती है कि सपन्याह बड़े पैमाने पर मूर्तिपूजा के समय में सेवा कर रहा है। यह स्पष्ट रूप से ऐसा लगता है कि वह यहाँ लोगों के खिलाफ जो संदेश और अभियोग प्रदान कर रहा है, वह संदेश योशियाह के सुधारों के बाद की तुलना में यहूदा की स्थितियों से अधिक मेल



खाता है। और हम सपन्याह 1 पद 4 पर जाते हैं, और प्रभु यह कहते हैं: मैं यहूदा और यरूशलेम के सभी निवासियों के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊँगा।

परमेश्वर का न्याय आने वाला है। वह अपना हाथ बढ़ाने वाला है। ऐसा क्यों होगा? खैर, बाकी आयतें इसे स्पष्ट करती हैं।

और मैं इस जगह से बाल के बचे हुए लोगों को, बाल के बचे हुए लोगों को काट डालूँगा। तो यहाँ हमारे पास कनानी देवताओं की पूजा है। और मनश्शे के शासनकाल में, वह मंदिर में अशेरा और अन्य मूर्तिपूजक वस्तुएँ लाता है।

इन सुधारों के लागू होने से पहले हम यही पढ़ने की उम्मीद करेंगे। और मूर्तिपूजक पुजारी का नाम पुजारी के साथ, वे लोग जो छतों पर स्वर्ग की सेना को नमन करते हैं और वे लोग जो झुककर प्रभु की कसम खाते हैं और फिर भी मिलकॉम की कसम खाते हैं। तो, दो अन्य मूर्तिपूजक प्रथाएँ।

इस समय यहूदा के लोग, आकाशीय देवताओं और तारामंडल की पूजा कर रहे हैं जो मूर्तिपूजक पूजा का हिस्सा थे। और फिर पाँचवें श्लोक के दूसरे भाग में, समन्वयवाद का यह विचार है क्योंकि ऐसे लोग हैं जो झुककर प्रभु की कसम खा रहे हैं। और फिर भी, उसी समय, वे भगवान मिलकॉम की कसम खा रहे हैं।

और यहाँ भगवान मिल्कोम या मोलेक, यह अम्मोनी देवता है और पुराने नियम में कई स्थानों पर उसकी पूजा का उल्लेख किया गया है। वह पुराने नियम में विशेष रूप से वह देवता है जो बाल बलि से सबसे अधिक जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। और हम जानते हैं कि मनश्शे, 2 इतिहास अध्याय 33 श्लोक 6, मनश्शे ने अपने बेटे को देवताओं को बलि के रूप में चढ़ाया था।

मिल्कोम या मोलेक की यह पूजा बाल पूजा से जुड़ी है। यह बच्चों की बलि से जुड़ी है। और इसलिए ये पाप चल रहे हैं।

यहाँ तीन चीज़ों का ज़िक्र है। बाल की पूजा, तारों की पूजा, मिलकॉम की पूजा। अब इस देवता मिलकॉम के नाम का मतलब है, यहाँ हमारे पास M, L, और K अक्षर हैं, जो राजा के लिए शब्द का प्रतिनिधित्व करते हैं।

और इसलिए, यह देवता एक ऐसा देवता है जिसे अम्मोनी लोग अपने राजा के रूप में पहचानते हैं। कुछ अंग्रेजी अनुवाद इसका अनुवाद करेंगे और इसे एक मानव राजा के संदर्भ में देखेंगे। लेकिन यहाँ, तारों वाले मेजबान और बाल के उल्लेख के संदर्भ में, यहाँ जो कुछ भी है वह समन्वयवाद प्रतीत होता है।

वे यहोवा और मिलकॉम दोनों की कसम खा रहे हैं। वे इन दोनों चीज़ों की पूजा करने की कोशिश करने की मौलिक असंगति को नहीं देखते हैं। इसलिए, यह तथ्य कि ये प्रथाएँ और इन देवताओं और इन देवताओं की पूजा सपन्याह के शुरुआती अध्यायों में यहाँ जो निंदा कर रहे हैं उसका

हिस्सा है, हमें यह संकेत देता है कि योशियाह के शासनकाल की शुरुआत में यहूदा की यही स्थिति थी।

2 राजाओं और 2 इतिहास में जिन सुधारों के बारे में हम पढ़ते हैं, वे नहीं हुए हैं। इसलिए, अगर हम पंक्तियों के बीच में पढ़ें, तो ऐसा प्रतीत होता है कि जोशिया के प्रचार या सुधारों को प्रेरित करने वाली चीजों में से एक सिर्फ उसके 18वें वर्ष में व्यवस्था की पुस्तक की खोज नहीं थी, न ही सिर्फ अधिकारियों और नेताओं का प्रभाव था, जिनकी शुरुआत से ही उसके जीवन में भूमिका थी, बल्कि यह सपन्याह का प्रचार था जिसने संभवतः यहूदा में अब तक के सबसे महान धार्मिक सुधारों को प्रेरित करने में मदद की। चूंकि ये सभी विभिन्न प्रभाव उसके जीवन में काम कर रहे हैं, इसलिए योशिया ने तय किया कि उसका शासन और उसका शासन मूर्तिपूजक प्रभावों को हटाने के प्रयास पर केंद्रित होगा, जिन्हें मनश्शे और अम्मोन ने यहूदा में लाया है और जो यहूदा की पूजा का इतना प्रमुख हिस्सा बन गए हैं।

अंततः, वह ऊँचे स्थानों को हटाने जा रहा है। वह मूर्तिपूजक वस्तुओं को हटाने जा रहा है। बाल बलि की बात करें तो, वह 2 राजा 23:10 में हिन्नोम की घाटी को अपवित्र करने जा रहा है, जो वह स्थान था जहाँ ये बाल बलि चल रही थी।

दरअसल, यहूदा के देश में यरूशलेम शहर के बाहर एक टोफेट था। योशियाह उस जगह को अपवित्र करने जा रहा था ताकि उसे अब पवित्र दफन स्थल के रूप में इस्तेमाल न किया जा सके क्योंकि परमेश्वर की नज़र में, वे चीज़ें घृणित थीं। इसलिए योशियाह के दिल में शुद्ध प्रकार की पूजा और शुद्ध प्रकार की भक्ति थी जो परमेश्वर चाहता था।

उसने अपना शासन और अपना शासन उन चीज़ों को लाने के लिए समर्पित कर दिया। उसने न केवल यहूदा के दक्षिणी राज्य में ऐसा किया, बल्कि हम यह भी देखते हैं कि उसने इन सुधारों को आगे बढ़ाया और उसने अपना प्रभाव बढ़ाया जहाँ वह लोगों को ईश्वर के प्रति शुद्ध भक्ति की ओर वापस बुला रहा है, जो मूल रूप से उत्तरी राज्य का हिस्सा था। अशूर के कमज़ोर होने के कारण, योशियाह वास्तव में इन क्षेत्रों पर नियंत्रण कर सकता है।

आखिरकार, एक कारण यह भी था कि जोशिया असीरियन साम्राज्य के पतन की प्रतीक्षा कर रहा था, और जब उसने बेबीलोन को बढ़ते देखा, तो उसे उम्मीद जगी क्योंकि उसे विश्वास था कि यह एक ऐसा तरीका था जिससे शायद वह दक्षिणी और उत्तरी राज्यों को फिर से एक कर सकेगा। आखिरकार, जोशिया की मृत्यु हो गई क्योंकि वह इस संघर्ष में राजनीतिक रूप से उस तरह से शामिल हो गया था जैसा कि परमेश्वर नहीं चाहता था कि वह करे। हालाँकि, जोशिया ने जो सुधार किए, उनका उसकी संस्कृति पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा।

मुझे लगता है कि योशियाह के बारे में हम यही कह सकते हैं कि योशियाह ने यहूदा को और समय दिया। उसने जो सुधार और वापसी की और जिस तरह से उसने पूरी तरह से प्रभु की आज्ञा का पालन किया और राजाओं में कहा गया है, उसने न तो बाएँ और न ही दाएँ मुँह किया। प्रभु के प्रति योशियाह की भक्ति ने अंततः उस न्याय को विलंबित कर दिया जिसे परमेश्वर ने मनश्शे के समय लाने की धमकी दी थी।

परमेश्वर अपने इरादों और अपनी योजनाओं की घोषणा करता है, लेकिन जब लोग सही तरीके से प्रतिक्रिया करेंगे, तो परमेश्वर या तो न्याय को रद्द कर देगा या वह न्याय में देरी करेगा। मुझे लगता है कि आखिरकार यही हम योशियाह के सुधारों के कारण होते हुए देखते हैं। हालाँकि, हम किंग्स में यह भी देखते हैं कि इसका दुखद हिस्सा यह है कि योशियाह के सुधारों ने न्याय में देरी की, लेकिन उन्होंने इसे रद्द या स्थगित नहीं किया।

इसका कारण यह है कि उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद, यहूदा अंततः अपनी मूर्तिपूजा की प्रथाओं पर वापस लौटने वाला है। 2 राजा अध्याय 23 आयत 25 से 27 में यह कहा गया है: उसके पहले कोई भी ऐसा राजा नहीं हुआ जो मूसा की व्यवस्था के अनुसार अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी शक्ति से यहोवा की ओर फिरा हो, और न ही उसके बाद कोई ऐसा राजा हुआ। फिर भी यहोवा ने अपने बड़े क्रोध की आग को शांत नहीं किया जो यहूदा के विरुद्ध भड़की थी, क्योंकि मनश्शे ने उसे भड़काया था।

यहोवा ने कहा, मैं यहूदा को अपनी दृष्टि से वैसे ही दूर कर दूँगा जैसे मैंने इस्राएल को दूर किया है, और मैं इस नगर को त्याग दूँगा जिसे मैंने यरूशलेम को चुना है, और उस भवन को भी जिसके विषय में मैंने कहा था, मेरा नाम वहाँ होगा। इसलिए, अंततः, वह न्याय में देरी करता है। वह न्याय को स्थगित कर देता है।

लेकिन जब यहूदा अपने पापी तरीकों पर वापस लौटता है और जब ये सुधार और योशियाह द्वारा यहूदा की पूजा को शुद्ध करने के लिए किए गए कामों के प्रभाव बहुत जल्दी गायब हो जाते हैं, तो न्याय की चेतावनियाँ फिर से प्रभावी हो जाती हैं। यिर्मयाह और दूसरे भविष्यद्वक्ता चेतावनी देने जा रहे हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के खिलाफ न्याय लाएगा क्योंकि वे अपने मूर्तिपूजक तरीकों पर वापस चले गए हैं। द्वितीय राजा अध्याय 23, श्लोक 10, योशियाह ने हिन्नोम की घाटी में मौजूद टोफेट को अपवित्र कर दिया ताकि बाल बलि की घृणित प्रथा जारी न रहे।

हालाँकि, यिर्मयाह अध्याय 7, श्लोक 31 और 32 का उल्लेख करता है। वह अध्याय 19 में भी इसके बारे में बात करता है। हिन्नोम की घाटी कल्लेआम की घाटी बनने जा रही है जहाँ लाशों का ढेर लगा होगा क्योंकि लोग उन मूर्तिपूजा प्रथाओं की ओर वापस लौट गए हैं जो वहाँ की जा रही थीं।

ऐसा लगता है कि वे फिर से बाल बलि की प्रथा पर लौट आए हैं। योशियाह उन धातु की मूर्तियों और अशेरा जैसी मूर्तिपूजक छवियों को हटाने जा रहा है जिन्हें मनश्शे और अम्मोन ने परमेश्वर के भवन में लाया था। लेकिन हम यहजेकेल अध्याय 8 में एक दर्शन देखते हैं जहाँ मंदिर सभी प्रकार की घृणित और घिनौनी छवियों से भरा हुआ है।

वे सभी दीवारों पर हैं। जानवरों और प्राणियों और सभी प्रकार की चीजों की छवियाँ हैं जिन्हें भगवान के रूप में चित्रित किया जा रहा है। और भगवान यहजेकेल से क्या कहते हैं, मैं अपनी महिमा को इन मूर्तिपूजक छवियों के साथ साझा नहीं करूँगा जिन्हें भगवान के घर में वापस लाया गया है।

इसलिए, योशियाह इन वस्तुओं और इन प्रतिमाओं को शुद्ध करता है, और फिर उन्हें वापस लाया जाएगा और पुनः स्थापित किया जाएगा। यिर्मयाह अध्याय 44 में मिस्र में रहने वाले कुछ निर्वासित लोग कहने जा रहे हैं, जब तक योशियाह ने ये सुधार नहीं किए, तब तक हमारे लिए सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था, और हमने स्वर्ग की रानी, इन कनानी प्रजनन देवताओं को अपनी भेंट चढ़ाना और उपहार लाना बंद कर दिया। हम उस पर वापस जाने वाले हैं क्योंकि चीजें हमारे लिए बेहतर होंगी।

इसलिए, लोग जल्दी से अपने मूर्तिपूजक मार्गों पर लौट आए। इसके परिणामस्वरूप, सपन्याह की चेतावनी, प्रभु का दिन आ रहा है, वह संदेश और भी ज़रूरी हो गया। योशियाह ने उस संदेश का जवाब दिया।

जब योशियाह ने सुना कि प्रभु का दिन आ रहा है, तो उसने उस संदेश पर प्रतिक्रिया दी। जब योशियाह ने व्यवस्थाविवरण 28 में व्यवस्था की पुस्तक में पाए जाने वाले शापों के बारे में सुना, तो उसने परमेश्वर की बात सुनी और उस पर प्रतिक्रिया दी। उसने पहचाना कि यह एक अत्यावश्यक मुद्दा था।

यह एक राष्ट्रीय आपातकाल था, लेकिन लोगों ने जल्दी ही इसे भूला दिया और न्याय लागू हो गया। योशियाह ने 31 साल तक ईश्वरीय शासन चलाया। 609 में उसकी मृत्यु के बाद, यहूदा के सभी राजाओं और उसके बाद आने वाले उसके बेटों में से प्रत्येक को उन राजाओं के रूप में लेबल किया गया जिन्होंने प्रभु की नज़र में बुरा किया था।

जब योशियाह की मृत्यु होती है, तो उसकी जगह उसका बेटा यहोआहाज आता है, जो तीन महीने तक राजगद्दी पर रहता है। मिस्र के लोग देश से वापस आते हैं। वे उसे हटा देते हैं, उसे राजगद्दी से उतार देते हैं, और उसकी जगह यहोयाकीम को बिठा देते हैं। यहोयाकीम एक बहुत ही दुष्ट और अधर्मी राजा था।

वह प्रभु की नज़र में बुरा करता है। फिर, 597 में बेबीलोनियों द्वारा शहर पर कब्ज़ा करने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। 18 साल का यहोयाकीम सिर्फ़ तीन महीने तक राजगद्दी पर रहा।

लेकिन राजा कहते हैं, उसने वही किया जो परमेश्वर की नज़र में बुरा था। फिर अंत में, सिदकिय्याह, एक कमज़ोर, अप्रभावी शासक जिसने परमेश्वर की अवज्ञा की, उसने भविष्यवाणी की सलाह नहीं मानी। राजा फिर से कहते हैं, उसने वही किया जो परमेश्वर की नज़र में बुरा था।

इसलिए, योशियाह के बाद, यहूदा अंधकार के इस दौर में प्रवेश करता है। वे अपनी मूर्तिपूजा की प्रथाओं में वापस लौट आते हैं। राजा ने प्रभु का अनुसरण करना छोड़ दिया।

इसके परिणामस्वरूप, बेबीलोन का आक्रमण होने वाला है। 605 ईसा पूर्व, 597 और फिर 586 में व्यवस्थित रूप से, प्रभु के दिन के आने के बारे में सपन्याह ने जो चेतावनियाँ दी थीं, उन्हें परमेश्वर द्वारा क्रियान्वित और कार्यान्वित किया जाएगा। ठीक है, अब आइए सपन्याह के संदेश को देखें।

मैं बस पुस्तक की संरचना के बारे में संक्षेप में बात करना चाहता हूँ। यह एक छोटी और संक्षिप्त पुस्तक है, लेकिन मुझे लगता है कि इसमें एक स्पष्ट और परिभाषित और पहचानने योग्य संरचना है जो हमें इस बारे में सोचने में मदद करती है कि हमें इसे कैसे पढ़ना चाहिए। सपन्याह की पुस्तक को हम चिआस्टिक संरचना के रूप में संदर्भित करते हैं।

सपन्याह का विषय बार-बार यह है कि प्रभु का दिन आ रहा है। यह चियास्टिक संरचना क्या करती है कि यह विकसित होती है और खुलती है और हमें यह देखने में मदद करती है कि प्रभु का यह दिन कैसा होगा। शुरुआत में, अध्याय 1 श्लोक 2 से 6 में इस चियास्म के पहले तत्व में, सपन्याह यहूदा के आने वाले न्याय के बारे में बात करने जा रहा है।

दुष्टों का न्याय किया जाएगा और उन्हें नष्ट किया जाएगा, और यह प्रभु के दिन का न्याय होगा। श्लोक 7 से 13 में आगे बढ़ते हुए, अगला तत्व यह है कि यह न्याय विशेष रूप से नेतृत्व और अमीर और धनी लोगों और यहूदा में प्रभावशाली लोगों पर पड़ने वाला है। हमारे पास सरीम शब्द है, जो अधिकारी के लिए शब्द है, जिसका उपयोग सपन्याह अध्याय 1, श्लोक 8 में किया गया है। फिर अध्याय 1 के अंत में, श्लोक 14 से 18 में, प्रभु के दिन का न्याय यहूदा से आगे बढ़ता है, और यह पूरी पृथ्वी तक फैल जाता है।

यह प्रभु के दिन के बारे में एक ऐसा तत्व होगा जो आमोस में हमने जो देखा उससे अलग है। आमोस ने प्रभु के दिन पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि यह इस्राएल पर आने वाला न्याय था। सपन्याह यहूदा पर आने वाले न्याय और फिर अंततः पूरी पृथ्वी पर आने वाले न्याय के बीच आगे-पीछे चलता है।

जब हम योएल की पुस्तक को देखते हैं, तो वहाँ भी उस प्रकार के न्याय का परिचय दिया गया है। प्रभु का दिन एक ऐसा न्याय था जिसे परमेश्वर राष्ट्रों पर लाएगा, यह कुछ ऐसा था जिसे हमने ओबद्याह की पुस्तक में पद 15 और आगे भी देखा। एदोम के लोग अपने दिनों में यहूदा पर आए विनाश पर आनन्दित हुए।

लेकिन एदोम के लोगों ने यह नहीं पहचाना कि उनके खिलाफ प्रभु का एक दिन आने वाला था। ओबद्याह इसे एक ऐसे न्याय के रूप में बताता है जो पूरी धरती पर फैल जाएगा। अध्याय 1 के अंत में हमें यही मिलता है। तो, अध्याय 1 में तीन तत्व हैं। यहूदा में दुष्टों का न्याय है।

धनवानों, अधिकारियों और नेतृत्व का न्याय है जिसे सारिम कहा जाता है और चेतावनी है कि प्रभु का दिन आ रहा है। फिर प्रभु का दिन निकट है और यह पूरी पृथ्वी को प्रभावित करने वाला है (पद 14 से 18)। अध्याय 2, पद 1 से 3 में हमें चिआस्टिक संरचना का मध्य भाग मिलता है। यह वास्तव में सपन्याह की अपील का केंद्र है क्योंकि सपन्याह इस निर्णय के प्रकाश में लोगों से पश्चाताप करने का आह्वान कर रहा है।

व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में भविष्यवक्ताओं की चेतावनियों के जवाब में योशियाह ने जो पश्चाताप किया था, उसके प्रकाश में, परमेश्वर ने उन्हें न्याय से बचा लिया। यदि यह पश्चाताप लंबे समय तक चलता, तो शायद बेबीलोन के संकट का न्याय पूरी तरह से टाला जा सकता था। लेकिन यहाँ अध्याय 2, श्लोक 1 से 3 में दी गई अपील है। अध्याय 1 में इस भयानक न्याय का

वर्णन किए जाने के बाद, सपन्याह हमें यह समझने में मदद करने जा रहा है कि यह आसन्न है, यह निकट है; हम केवल प्रभु के दिन के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जो अंत समय में होने वाला है।

अगर ये लोग अपने तौर-तरीके नहीं बदलते हैं तो यह बहुत ही मुश्किल है। इसलिए, सपन्याह ने श्लोक 1 के अनुसार जो किया, वह यह है कि सब लोग इकट्ठे हो जाओ। हाँ, सभी बेशर्म जातियों को इकट्ठा करो, इससे पहले कि यह आदेश प्रभावी हो, इससे पहले कि वह दिन भूसे की तरह बीत जाए, इससे पहले कि यहोवा का भड़कता हुआ क्रोध तुम्हारे ऊपर आए, यहोवा के क्रोध का दिन।

हे देश के सब नम्र लोगो , जो यहोवा के धर्मी आदेशों का पालन करते हो, उसे खोजो। धर्म की खोज करो। नम्रता की खोज करो। शायद तुम यहोवा के क्रोध के दिन बच सको।

तो, परमेश्वर के क्रोध और परमेश्वर के क्रोध का यह विचार, यही वह है जो हमें अध्याय 1 में वर्णित किया जा रहा है। इसके प्रकाश में, यदि लोग प्रभु की खोज करेंगे, यदि वे धार्मिकता की खोज करेंगे, तो अभी भी अवसर है कि न्याय को टाला जा सकता है। परमेश्वर ने पहले ही कहा है, मैं यरूशलेम को बर्तन की तरह पोंछने जा रहा हूँ। मनश्शे के समय की दुष्टता के कारण यह एक पूर्ण कथन जैसा लगता है।

लेकिन परमेश्वर ने एक बार फिर समय-सीमा आगे बढ़ा दी और लोगों को पश्चाताप करने का एक और मौका दिया। मेरा मानना है कि यिर्मयाह के दिनों में, जब वह प्रचार कर रहा था, तो वह वही काम करने जा रहा था। वह मंदिर जाएगा।

20 साल तक प्रचार करने के बाद वह अपनी भविष्यवाणियों की पुस्तक को पढ़ेगा। प्रभु कहते हैं, शायद वे इसे दिल से लगा लेंगे, और शायद मैं उन पर आने वाली विपत्ति को टाल दूँगा और न भेजूँगा जिसकी मैंने उनके खिलाफ धमकी दी है। परमेश्वर अभी भी लोगों को पश्चाताप करने का अवसर दे रहा है।

लेकिन हम यहाँ जो देखते हैं वह यह है कि, एक अर्थ में, सपन्याह द्वारा दिया जा रहा आशा का संदेश उससे थोड़ा अलग है जो हमने पहले देखा है। अब, यदि वे प्रभु की खोज करेंगे और अब यदि वे धार्मिकता और नम्रता की खोज करेंगे, जो कि आमोस ने आमोस अध्याय 5 में कहा था, तो अब केवल यह संभावना है कि जो लोग धार्मिक हैं वे परमेश्वर के क्रोध के दिन छिप सकते हैं। यह भावना कि इस न्याय को पूरी तरह से टाला जा सकता है, अब तस्वीर से बाहर है।

लेकिन अगर पर्याप्त धर्मी लोग हैं, तो वे छिप जाएँगे। मेरा मानना है कि अगर योशियाह द्वारा लाया गया यह पुनरुत्थान स्थायी हो जाता, अगर लोगों ने प्रभु के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरी तरह से निभाया होता, तो इस बिंदु पर न्याय को अभी भी टाला जा सकता था और अभी भी टाला जा सकता था। तो यह पुस्तक के मध्य भाग में है।

यही वह अपील है जो सपन्याह इन लोगों से करने की कोशिश कर रहा है। फिर पुस्तक के शेष अध्याय 2 और 3 में जो होता है वह यह है कि अध्याय 1 में हमने जो तत्व देखे हैं वे उलटे दिखाई

देते हैं। अध्याय 1 की आयत 14 से 18 में अंतिम तत्व प्रभु के उस दिन की चेतावनी थी जो सभी राष्ट्रों पर आने वाला था।

खैर, अध्याय 2, श्लोक 4 से 15 में, हमारे पास इस्राएल के आस-पास के राष्ट्रों के विरुद्ध एक न्याय और न्याय की भविष्यवाणियों की एक श्रृंखला है। न्याय की चेतावनी है कि परमेश्वर चार विशिष्ट लोगों और चार विशिष्ट राष्ट्रों के विरुद्ध लाने जा रहा है। फिर वह अध्याय 3, श्लोक 1 से 7 में वापस लौटेगा, अध्याय 3 श्लोक 1 से 7 में भ्रष्ट शहर यरूशलेम और भ्रष्ट नेताओं, अधिकारियों और सारिम के न्याय की ओर। फिर, अंत में, पुस्तक का अंतिम तत्व, और इस तरह की पुस्तक की शुरुआत और अंत, हमारे पास यहूदा और उसके भाग्य की आने वाली बहाली है।

मुझे लगता है कि यहाँ क्या हो रहा है, यह अध्याय 3 की आयत 8 से 20 में है, सपन्याह का दर्शन तत्काल भविष्य में होने वाली घटनाओं से हटकर है। वह इस बारे में बात कर रहा है कि भविष्य में क्या होने वाला है। यहाँ हम केवल निर्वासन से वापसी के बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

हम इस्राएल की पूर्ण और अंतिम तथा सम्पूर्ण बहाली के बारे में बात कर रहे हैं, जहाँ वे स्थायी रूप से भूमि पर रहेंगे और परमेश्वर द्वारा आशीर्वादित होंगे तथा न्याय के इस समय के बाद पुनर्स्थापित होंगे। पुस्तक की शुरुआत में यहूदा के विरुद्ध यह विनाशकारी न्याय है। पुस्तक के अंत में हमें इसका आने वाला उलटफेर तथा यहूदा की पुनर्स्थापना देखने को मिलती है।

यह एक सुंदर चिआस्टिक संरचना है जो यहूदा के न्याय और दुनिया के न्याय को एक साथ जोड़ती है। इसका दायरा ब्रह्मांडीय है। इस पुस्तक के मध्य भाग में पश्चाताप की अपील है, लेकिन फिर जब परमेश्वर ने अपना न्याय किया है, तो यह आशा है कि अंततः एक पुनर्स्थापना होने जा रही है।

अब मैं अध्याय 1 पर वापस जाना चाहूँगा। मैं चाहता हूँ कि हम प्रभु के उस दिन की प्रकृति पर ध्यान दें जिसे परमेश्वर अपने लोगों के विरुद्ध लाने की योजना बना रहा है। यहाँ न्याय, जैसा कि अक्सर भविष्यवक्ताओं में होता है, हमने पहले भी इस बारे में बात की है, इस अंश में हमें निश्चित रूप से परमेश्वर के क्रोध का सफेद पानी मिलता है। यहाँ जिस न्याय का वर्णन किया जा रहा है, उसका वर्णन बिल्कुल विनाशकारी शब्दों में किया गया है।

आखिरकार, जैसा कि हमने चर्चा की है, यह न्याय ब्रह्मांडीय दायरे में है। यह एक ऐसा न्याय है जो यहूदा और राष्ट्रों दोनों पर पड़ेगा। फिर से, जैसा कि हमने अन्य अंशों और भविष्यवक्ताओं में अन्य स्थानों पर प्रभु के दिन के बारे में चर्चा की है, यहाँ प्रभु का दिन निकट और दूर दोनों है।

तो, एक अर्थ में, सपन्याह ऐतिहासिक न्याय के बारे में बात कर रहा है जो उसके दिनों में होगा। परमेश्वर यहूदा का न्याय करेगा, और फिर परमेश्वर उनके आस-पास के राष्ट्रों का न्याय करेगा। इसके अलावा, यह प्रभु के महान और अंतिम दिन का पूर्ववलोकन है।

फिर से, पुस्तक के अंत में, मुझे लगता है कि उनका ध्यान दूर के क्षितिज और उन चीज़ों पर अधिक हो जाता है जो परमेश्वर ने भविष्य के लिए योजना बनाई है। ठीक है। इस निर्णय की विनाशकारी प्रकृति दो तरीकों से परिलक्षित होती है।

मुझे लगता है कि इसका एक हिस्सा सिर्फ शब्दावली है, प्रभु का दिन। याद रखें, यह एक ऐसा शब्द है जो, मुझे लगता है, इज़राइल की पंथिक परंपराओं का हिस्सा था। यह उनकी ऐतिहासिक परंपराओं का हिस्सा था जहाँ वे इस तथ्य का जश्न मनाते थे कि ईश्वर ने इज़राइल की ओर से हस्तक्षेप किया।

इतिहास में कुछ खास मौकों और जगहों पर उन्होंने अपने दुश्मनों को हराने के लिए हस्तक्षेप किया। हम पलायन को देख सकते हैं। हम विजयों को देख सकते हैं।

हम उन विजयों को देख सकते हैं जो परमेश्वर ने दाऊद को दिलाईं। हम इस्राएल के इतिहास में अन्य समयों को देख सकते हैं जहाँ परमेश्वर ने सीधे हस्तक्षेप किया। कई बार, जैसे 2 इतिहास 20 में यहोशापात के समय में, परमेश्वर सचमुच लोगों के लिए युद्ध लड़ता है।

हालाँकि, अब यह दिन वह दिन बन गया है जहाँ भगवान यहूदा का न्याय करने जा रहे हैं क्योंकि वे उनके दुश्मन हैं। भगवान अब घरेलू टीम के लिए नहीं खेल रहे हैं, वे विज़िटर के लिए खेल रहे हैं। भगवान अब यांकी नहीं रहे, वे रेड सॉक्स बन गए हैं या इसके विपरीत।

मैं उस प्रतिद्वंद्विता में हस्तक्षेप नहीं करूँगा, लेकिन भगवान ने अपनी निष्ठा बदल ली है। फिर से, प्रभु के दिन का विचार प्राचीन निकट पूर्व में एक अवधारणा थी जिसने इस विचार पर जोर दिया। यह अक्सर युद्ध की बयानबाजी का हिस्सा था।

यह राजाओं की बयानबाजी का हिस्सा था कि राजा अक्सर दावा करते थे कि भले ही अभियान में हफ़्तों या महीने लगे, लेकिन वे दावा करते थे कि उनके पास एक ही दिन में अपने दुश्मनों को हराने की शक्ति है। डगलस स्टीवर्ट ने अपने लेख, द सॉवरेन्स डे ऑफ़ कॉन्ट्रास्ट में इस पृष्ठभूमि की व्याख्या की है। वह यह कहते हैं: इस स्पष्ट रूप से व्यापक प्राचीन निकट पूर्वी परंपरा के अनुसार, एक सच्चे महान राजा या संप्रभु के पास ऐसी सार्वभौमिक शक्ति और अधिकार होता था कि वह एक ही दिन में अपने दुश्मनों के खिलाफ़ एक सैन्य अभियान या यहाँ तक कि विजय का पूरा युद्ध पूरा कर सकता था।

हालाँकि अधिकांश राजाओं के युद्ध निर्णायक युद्ध में समाप्त होने से पहले हफ़्तों, महीनों या सालों तक चल सकते हैं, लेकिन एक सच्चा शासक एक दिन में अपना युद्ध जीत सकता है। वह एक सुमेरियन शिलालेख की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो 1960 ईसा पूर्व का है जिसमें दावा किया गया है कि उर के सुमेरियन राजा ने सुसा की भूमि पर कब्ज़ा कर लिया और फिर एक दिन में उन्हें अपमानित किया। अब, मुझे लगता है कि हमारे पास इसका प्रतिबिंब है, अध्याय दो, श्लोक चार में भी, जब परमेश्वर राष्ट्रों के न्याय के बारे में बात करना शुरू करता है।

वह कहता है, पलिशियों का शहर गाजा वीरान हो जाएगा। पलिशियों का दूसरा शहर अश्कलोन उजाड़ हो जाएगा। अश्दोद के लोगों को दोपहर के समय बाहर निकाल दिया जाएगा और एक्रोन को उखाड़ दिया जाएगा।



यह लड़ाई खत्म होने वाली है। वे दिन के मध्य तक भागने वाले हैं। इसलिए, प्रभु के दिन का विचार अपने आप में एक भयावह अवधारणा है।

जैसा कि इस युद्ध का वर्णन किया गया है और जैसा कि इस न्याय का वर्णन किया गया है, यह हमें पद दो से चार में भी याद दिलाता है। मुझे लगता है कि यहाँ जो विचार और छवि और चित्र हमें दिया गया है वह है सृष्टि का सफाया और उलट जाना और नष्ट हो जाना। परमेश्वर यहाँ जो न्याय लाने के लिए तैयार है, वह कुछ हद तक नूह के जलप्रलय के न्याय जैसा लगता है। पद दो से चार में जो कहा गया है उसे सुनिए, मैं पृथ्वी के चेहरे से सब कुछ पूरी तरह से मिटा दूँगा, यहोवा की यह वाणी है।

मैं मनुष्य और पशु को मिटा दूँगा। मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों को मिटा दूँगा। वास्तव में, हम उत्पत्ति अध्याय एक को उलट कर रख देते हैं।

छठा दिन, भगवान ने मनुष्य और जानवरों की रचना की। यह सब हटा दिया गया है। सृष्टि के पहले के समय में, भगवान ने मछलियों और पक्षियों की रचना की थी।

परमेश्वर उन्हें मिटा देता है। न्याय पूर्ण और व्यापक है, और दुष्टों के साथ मलबे, मैं पृथ्वी के चेहरे से मानव जाति को नष्ट कर दूँगा। फिर वह कहता है, मैं यहूदा के खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊँगा।

सपन्याह के संदेश और बयानबाजी का एक हिस्सा यह है कि हम एक ब्रह्मांडीय न्याय और एक ऐसे न्याय के बीच आगे-पीछे जाते हैं जो यहूदा पर केंद्रित है। यह एक विनाशकारी न्याय होगा जो सृष्टि को मिटा देगा। यह परमेश्वर के क्रोध का सफेद पानी है।

यह लगभग नूह के जल प्रलय की ही पुनर्स्थापना है। यिर्मयाह ने अध्याय चार, श्लोक 23 में इसी तरह की कल्पना का उपयोग किया है। मैंने पृथ्वी पर दृष्टि डाली और देखा कि वह शून्य थी।

यह बिना किसी आकार और शून्य के था। तोहू वी' बोहू, वही शब्दावली जिसका उपयोग उत्पत्ति अध्याय एक में परमेश्वर द्वारा रचनात्मक कार्य करने से पहले किया गया है। यह न्याय सृष्टि को उस स्थिति में वापस लाने जा रहा है जो परमेश्वर द्वारा सृष्टि का कार्य करने से पहले थी।

वह कहता है, "आसमान की ओर, और उनमें कोई प्रकाश नहीं था। मैंने पहाड़ों की ओर देखा। देखो, वे काँप रहे थे।"

सभी पहाड़ियों पर वे इधर-उधर चले गए। मैंने देखा और पाया कि वहाँ कोई आदमी नहीं था और हवा के सभी पक्षी भाग गए थे। आप समझना चाहते हैं कि बेबीलोन का आक्रमण कितना विनाशकारी होने वाला है।

कल्पना कीजिए कि अगर हम उत्पत्ति के अध्याय एक को रद्द कर दें तो क्या होगा। सपन्याह कहने जा रहा है, कल्पना कीजिए कि अगर सृष्टि को ही रद्द कर दिया जाए और हटा दिया जाए तो क्या होगा। मुझे लगता है कि हमारे पास सृष्टि के रद्द होने, नूह के जलप्रलय और उन सभी चीजों का संदर्भ है जो चल रही हैं।

न्याय की विनाशकारी प्रकृति को समझने में हमारी मदद करने वाली अन्य बातों में से एक यह है कि अध्याय एक, श्लोक सात में, प्रभु कहते हैं: प्रभु परमेश्वर के सामने चुप रहो क्योंकि प्रभु का दिन निकट है। यह बिलकुल नजदीक है। यह भी कहा गया है कि प्रभु ने एक बलिदान तैयार किया है, और उसने अपने अतिथि को पवित्र किया है।

प्रभु के दिन के न्याय की तुलना उन बलिदानों से की जाती है जो लोग यरूशलेम शहर में प्रभु को चढ़ाते हैं और पेश करते हैं। हालाँकि, विडंबना यह है कि शहर और लोग खुद ही बलिदान बन गए हैं जिन्हें जला दिया जाएगा और चढ़ाया जाएगा। इसलिए, सभी तरह से, यह न्याय एक विनाशकारी न्याय होगा जिसे परमेश्वर यहूदा के खिलाफ़ लाएगा।

फिर अध्याय एक के अंत में, यह एक ऐसा न्याय होगा जिसे परमेश्वर राष्ट्रों के विरुद्ध लागू करेगा। अध्याय दो में जिन राष्ट्रों का उल्लेख किया गया है, वे इसे और अधिक विशिष्ट बनाते हैं, पश्चिम में स्थित पलिशियों के न्याय का उल्लेख है। पूर्व में स्थित मोआबियों का न्याय है।

दक्षिण में रहने वाले कुशियों का न्याय है। फिर अशूरियों के खिलाफ़ न्याय का संदेश है जो नहूम द्वारा अपनी पुस्तक में उत्तर में दुश्मनों के न्याय के बारे में कही गई बातों से बहुत मिलता-जुलता है। तो फिर से, इन विशिष्ट लोगों का ऐतिहासिक न्याय अंततः उस न्याय की ओर इशारा कर रहा है जिसे परमेश्वर पूरी पृथ्वी के खिलाफ़ लाएगा और अंतिम न्याय जो अंतिम दिनों में प्रभु के अंतिम और अंतिम दिन में आएगा।

ठीक है। अंत में, न्याय के इस विनाशकारी संदेश के बाद, यह कुछ ऐसा होने जा रहा है जो इस्राएल और उनके आस-पास के राष्ट्रों, यहूदा और उनके आस-पास के राष्ट्रों के साथ होने वाला है, यरूशलेम और यहूदा शहर पर विद्रोह और उसके नेताओं के पश्चाताप न करने के कारण मृत्यु की अंतिम घोषणा की गई है। अध्याय तीन, श्लोक एक में यह कहा गया है: हाय उस विद्रोही और अपवित्र, अत्याचारी शहर पर।

वह किसी की आवाज़ नहीं सुनती। वह किसी सुधार को स्वीकार नहीं करती। वह प्रभु पर भरोसा नहीं करती और अपने परमेश्वर के निकट नहीं जाती।

इसलिए, यहूदा इस न्याय का लक्ष्य है, ठीक वैसे ही जैसे राष्ट्र हैं, क्योंकि वे एक विद्रोही शहर हैं। वे सुधार को स्वीकार नहीं करते। अध्याय दो, आयत एक से तीन में पश्चाताप करने का आह्वान किया गया है।

यह भविष्यवाणी, एक तरह से, हमें अंतिम प्रतिक्रिया देती है। योशियाह के समय में कुछ समय के लिए पश्चाताप होगा, लेकिन अंततः, वे प्रभु की ओर वापस नहीं लौटेंगे। मुझे लगता है कि यहूदा के न्याय को राष्ट्रों के न्याय से जोड़ने और जोड़ने वाली बयानबाजी का एक उद्देश्य और एक कारण यह है कि इससे हमें यह विचार देखने में मदद मिलती है कि यहूदा अपने आस-पास के बुतपरस्त लोगों से अलग नहीं है।

वे सोच सकते हैं कि वे छूटे हुए हैं क्योंकि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, लेकिन जिस तरह से भविष्यवक्ता यहूदा के न्याय और राष्ट्रों के न्याय को एक साथ जोड़ता है, वह इस विचार को दर्शाता है कि वे भी एक और दुष्ट, अवज्ञाकारी लोग हैं जो प्रभु के दिन उसके न्याय के पात्र बनने जा रहे हैं। पद पाँच कहता है कि उसके भीतर का प्रभु धर्मी है। वह कोई अन्याय नहीं करता।

हर सुबह, वह अपना न्याय दिखाता है। हर सुबह, वह असफल नहीं होता, लेकिन अन्यायी को कोई शर्म नहीं आती। और इसलिए, उसके कारण, और क्योंकि वे यहोवा के चरित्र को नहीं दर्शाते, प्रभु अंततः अपने लोगों का न्याय करने जा रहा है।

ठीक है। सपन्याह में अंतिम शब्द यह है कि आशा का संदेश है, हालाँकि। और जैसे-जैसे भविष्यवक्ता निकट क्षितिज से दूर होता है और प्रभु का दिन जो निकट है और यह विनाशकारी न्याय जो बलिदान की तरह और सृष्टि के विनाश की तरह होने वाला है, दूर के भविष्य के लिए एक आशा है।

और अध्याय तीन, श्लोक आठ, कहने जा रहा है, यहाँ परमेश्वर के लोगों के लिए प्रोत्साहन है। यहाँ सपन्याह जैसे धर्मी लोगों के लिए प्रोत्साहन है, जो इस समय से गुज़रने वाले हैं, और यिर्मयाह और यहजेकेल जैसे भविष्यद्वक्ताओं के लिए। वे इस समय से गुज़रे, और उन्होंने विनाश का अनुभव किया।

भविष्यवक्ता कहते हैं, यहाँ प्रभु का संदेश है। इसलिए, उस दिन की प्रतीक्षा करो जब मैं शिकार को पकड़ने के लिए उठूंगा, क्योंकि मेरा निर्णय है कि मैं राष्ट्रों को इकट्ठा करूँ, राज्यों को इकट्ठा करूँ, उन पर अपना क्रोध और अपना सारा जलता हुआ गुस्सा उंडेलूँ, क्योंकि मेरी जलन की आग में, सारी पृथ्वी भस्म हो जाएगी। जैसा कि आप इन चीजों से गुजर रहे हैं, प्रभु सपन्याह जैसे धर्मी लोगों और ईश्वरीय लोगों से कह रहे हैं, मेरी प्रतीक्षा करो, और अंततः एक उद्धार होगा।

अशूर संकट के दौरान मीका नामक 12वें अध्याय में वर्णित भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई के समय में हम एक प्रमुख उद्देश्य के रूप में जो देखना शुरू करते हैं, वह है, प्रभु की प्रतीक्षा करना। यह शोक का समय है। अब, परमेश्वर अंततः इसे आनन्द के समय में बदल देगा।

हबक्कूक का संदेश जिसे हम अगले भाग में देखने जा रहे हैं, सपन्याह के इस कथन से बहुत मिलता-जुलता है, प्रभु पर भरोसा रखें, वह अंततः इसे सही कर देगा। भविष्य में परमेश्वर एक विश्वव्यापी न्याय करेगा जो उसके लोगों की पूर्ण, संपूर्ण और अंतिम बहाली और उद्धार लाएगा। ठीक है।

यहाँ आखिरी वादा है जिसे मैं चाहता हूँ कि हम पद 9 में देखें। क्योंकि उस समय, जब परमेश्वर भविष्य में उद्धार का यह महान कार्य करेगा, मैं लोगों की बोली को शुद्ध बोली में बदल दूँगा, और वे सब के सब यहोवा का नाम पुकारेंगे और कुश की नदियों के पार से एक मन होकर उसकी सेवा करेंगे, यहाँ पहले न्याय के लिए लक्षित लोगों में से एक, मेरे आराधक, मेरे बिखरे हुए लोगों की बेटी मेरी भेंट लाएगी। और इसलिए, परमेश्वर यहाँ लोगों की बोली को शुद्ध बोली में बदलने के बारे में बात करते हुए जो करने का वादा करता है वह यह है कि मेरा मानना है कि हमारे पास

यहाँ जो है, उसने पहले उत्पत्ति का संकेत दिया है, हमारे पास यहाँ जो है वह उस अभिशाप का उलटा है जो बाबेल के टॉवर पर मानव जाति पर लगाया गया था। और जब उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और इस टॉवर को बनाने और परमेश्वर के विरोध में इस धार्मिक व्यवस्था को बनाने की कोशिश की, तो परमेश्वर ने जो किया वह यह था कि उसने राष्ट्रों को तितर-बितर कर दिया, उसने भाषाओं को भ्रमित कर दिया, और यह एक प्रकार का दंड था।

अंततः, यहाँ अंतिम उद्धार में, प्रभु के दिन में, जब परमेश्वर इस्राएल को बचाएगा, तो वह सभी लोगों की भाषा को बदल देगा। भले ही दुनिया भर में न्याय हो और पूरी पृथ्वी भस्म हो जाए, परमेश्वर के उपासक होंगे, न केवल इस्राएल के बिखरे हुए लोगों में से, न केवल निर्वासितों में से, बल्कि परमेश्वर सभी राष्ट्रों की भाषा को बदलने जा रहा है ताकि वे एक साथ प्रभु की आराधना कर सकें। और यशायाह अध्याय 19 में, जब यशायाह ने भविष्य के राज्य में परमेश्वर के तीन लोगों के होने की बात की, तो इस्राएल होगा, मिस्र होगा, और अश्शूर होगा।

इसमें कहा गया है कि वे विदेशी लोग कनान की भाषा बोलेंगे। वे ऐसी भाषा बोल सकेंगे जो उन्हें प्रभु की आराधना करने में सक्षम बनाएगी। इसलिए यहाँ सपन्याह में, जहाँ हमें न्याय का यह विनाशकारी संदेश मिलता है, प्रभु का दिन आ रहा है, और यह अविश्वसनीय वादा भी है कि, अंततः, परमेश्वर सभी राष्ट्रों की भाषा बदल देगा।

परमेश्वर इस शुद्धिकरण न्याय के माध्यम से ऐसे लोगों का निर्माण करेगा जो उसकी आराधना करेंगे। इस्राएल और यहूदा, जब वे फिर से एक हो जाएंगे, तो वे इसके केंद्र में होंगे। सपन्याह की अंतिम आयत यह कहती है, उस समय, मैं तुम्हें अंदर लाऊंगा, उस समय जब मैं तुम्हें एक साथ इकट्ठा करूंगा, क्योंकि मैं तुम्हें पृथ्वी के सभी लोगों के बीच प्रसिद्ध और प्रशंसित बनाऊंगा, जब मैं तुम्हारी आँखों के सामने तुम्हारा भाग्य बहाल करूंगा, प्रभु कहते हैं।

परमेश्वर अपने लोगों की किस्मत को फिर से संवारने जा रहा है। भविष्यवक्ताओं का संदेश फिर से इस संदेश में समाहित है जो सपन्याह ने बेबीलोन के संकट से पहले योशियाह और यहूदा के लोगों को दिया था: तुमने पाप किया है और वाचा को तोड़ा है।

आपको परमेश्वर के पास वापस आने की ज़रूरत है। अगर आप नहीं आते, तो न्याय होगा। जब वे वापस नहीं आते, जब वे पूरी तरह से पश्चाताप नहीं करते, तो न्याय आता है।

लेकिन आशा की पेशकश और वादा है कि परमेश्वर अंततः अपने लोगों के भाग्य को बहाल करेगा और सपन्याह द्वारा बताए गए भयानक न्याय को पलट देगा। पुस्तक की शुरुआत में, सृष्टि का विनाश होता है और नूह की बाढ़ फिर से लौटने वाली है। लेकिन पुस्तक के अंत में, बाबेल के अभिशाप का विनाश होता है, और परमेश्वर लोगों और राष्ट्रों के बीच अपने लिए एक आराधना करने वाले लोगों का निर्माण करेगा।

यह डॉ॰ गैरी येट्स द्वारा सपन्याह की पुस्तक पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया 12वाँ व्याख्यान है। यह सपन्याह की पुस्तक पर व्याख्यान श्रृंखला का 24वाँ व्याख्यान है।